International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 41-43

प्रवासी जीवनः अवधारणा एवं भारतीय डायस्पोरा

मुस्कान सिंह
शोधार्थी, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा तथा पत्रकारिता विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र प्रवासी जीवन की बहुआयामी अवधारणा का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें प्रवास के विविध रूपों जैसे; ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से भारतीय डायस्पोरा के संदर्भ में प्रवासी अनुभव, पहचान का संकट, सांस्कृतिक समायोजन तथा वैश्वीकरण के प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन इस तथ्य को भी स्थापित करता है कि प्रवास केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं बल्कि एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के स्वरूप को गहराई से प्रभावित करता है।

मूल शब्दः प्रवास, प्रवासी जीवन, डायस्पोरा, भारतीय प्रवासी, सांस्कृतिक पहचान, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन

मानव सभ्यता के विकास में प्रवास की प्रक्रिया अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण रही है। आदिकाल से ही मनुष्य ने बेहतर जीवन, संसाधनों की उपलब्धता और सुरक्षा की दृष्टि से स्थान परिवर्तन किया है। प्रारंभिक मानव समूह भोजन, जल और अनुकूल जलवायु की खोज में निरंतर गतिशील रहे, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में मानव बसावट का विस्तार हुआ। समय के साथ जैसे–जैसे समाज का विकास हुआ, प्रवास की प्रकृति भी बदलती गई और यह केवल अस्तित्व की आवश्यकता तक सीमित न रहकर आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक उन्नति का माध्यम बन गया।

मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल में प्रवास ने एक नया स्वरूप ग्रहण किया, जब व्यापार, साम्राज्य विस्तार और औपनिवेशिक नीतियों के कारण बड़े पैमाने पर जनसंख्या का स्थानांतरण हुआ। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में औपनिवेशिक काल के दौरान गिरमिटिया श्रमिकों का विदेशों में भेजा जाना प्रवास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने भारतीय समाज और संस्कृति के वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक युग में प्रवास एक जटिल और बहुआयामी वैश्विक परिघटना बन चुका है, जिसमें आर्थिक अवसरों की खोज, शिक्षा, तकनीकी विकास, राजनीतिक परिस्थितियाँ तथा सामाजिक आकांक्षाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण और संचार क्रांति ने प्रवास को और अधिक तीव्र तथा सुलभ बना दिया है। आज व्यक्ति केवल रोजगार के लिए ही नहीं, बल्कि बेहतर जीवन स्तर, पहचान, और वैश्विक अवसरों की तलाश में भी प्रवास करता है।

शोध विस्तार

प्रवासी जीवन को समझने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम इसे केवल स्थान परिवर्तन की घटना के रूप में न देखें, बल्कि एक जटिल, बहुस्तरीय और गतिशील सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझें। जब कोई व्यक्ति अपने मूल स्थान को छोड़कर किसी अन्य देश या क्षेत्र में बसता है, तो वह केवल भौगोलिक दूरी ही तय नहीं करता, बल्कि वह अपनी सांस्कृतिक स्मृतियों, भाषाई पहचान, सामाजिक संबंधों और मनोवैज्ञानिक संरचनाओं के साथ एक नए सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में प्रवेश करता है। यह संक्रमण केवल बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक भी होता है, जो व्यक्ति की सोच, व्यवहार, संबंधों और आत्मबोध को गहराई से प्रभावित करता है। इस प्रकार प्रवास एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति और समाज दोनों के स्वरूप को पुनर्गठित करती है। प्रवासी जीवन आधुनिक वैश्विक परिदृश्य की एक ऐसी सशक्त और बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसने मानव सभ्यता के स्वरूप को नई दिशा प्रदान की है। इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रवास केवल भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण नहीं, बल्कि यह एक गहन मानवीय अनुभव है जिसमें व्यक्ति अपनी स्मृतियों, सांस्कृतिक मूल्यों, भाषा और पहचान को साथ लेकर एक नवीन सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में स्वयं को पुनर्स्थापित करता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि आंतरिक रूप से भी रूपांतरित होता है, जिससे एक नवीन 'वैश्विक व्यक्तित्व' का निर्माण होता है। भारतीय परंपरा में यह विचार सदैव से विद्यमान रहा है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार है। प्रवासी जीवन इसी दार्शनिक दृष्टि का साकार रूप प्रस्तुत करता है महाउपनिषद् (Mahopanishad), अध्याय 6, श्लोक 71 में कहा गया है कि "अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।" अर्थात् उदार हृदय वाले व्यक्तियों के लिए समस्त पृथ्वी एक परिवार के समान है। प्रवासी भारतीय इसी भावना के वाहक बनकर विश्व के विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों का प्रसार करते हैं। इस ओर यदि आर्थिक दृष्टि से भी देखा जाये तो प्रवासी समुदायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल अपने निवास देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि अपने मूल देश के विकास में भी सक्रिय योगदान देते हैं। 'रेमिटेंस' के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, निवेश के अवसर उत्पन्न करना तथा ज्ञान और तकनीकी कौशल का हस्तांतरण करना ये सभी प्रवासी जीवन के सकारात्मक आयाम हैं।

इसके अलावा सांस्कृतिक स्तर पर प्रवासी जीवन ने वैश्विक समाज को एक नई बहुलतावादी पहचान प्रदान की है। भारतीय त्योहारों, योग, आयुर्वेद, संगीत और भोजन के माध्यम से भारतीय संस्कृति ने विश्व स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इस संदर्भ में यह श्लोक अत्यंत सार्थक प्रतीत होता है—

> "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" (भगवद्गीता, अध्याय 4 (ज्ञान–कर्म–संन्यास योग), श्लोक 38)

अर्थात् ज्ञान के समान इस संसार में कोई पवित्र वस्तु नहीं है। प्रवासी भारतीयों द्वारा ज्ञान, कौशल और संस्कृति का वैश्विक स्तर पर प्रसार इसी ज्ञान–परंपरा का विस्तार है।

हालांकि, प्रवासी जीवन चुनौतियों से रहित नहीं है। पहचान का संकट, सांस्कृतिक द्वंद्व, सामाजिक अलगाव और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ प्रवासी अनुभव का अभिन्न अंग हैं। इन परिस्थितियों में व्यक्ति को आत्मबल और धैर्य के साथ स्वयं को स्थापित करना पड़ता है। इस संदर्भ में यह श्लोक अत्यंत प्रेरणादायक है—

"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।" (भगवद्गीता, अध्याय 6 (आत्मसंयम योग), श्लोक 5)

अर्थात् व्यक्ति को स्वयं अपने प्रयासों से ही अपने उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। प्रवासी जीवन में यही आत्मबल व्यक्ति को संघर्षों के बीच सफलता की ओर अग्रसर करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रवासी जीवन केवल एक सामाजिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक सृजनात्मक और परिवर्तनकारी अनुभव है, जो मानवता को जोड़ने, संस्कृतियों को समृद्ध करने और वैश्विक एकता को सुदृढ़ करने का कार्य करता है। भारतीय डायस्पोरा इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने यह सिद्ध किया है कि भौगोलिक दूरियाँ सांस्कृतिक और मानवीय संबंधों को सीमित नहीं कर सकतीं।

इसी भाव को यह श्लोक अत्यंत सुंदर ढंग से व्यक्त करता है—

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।" (यजुर्वेद. शान्ति मंत्र.)

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी का जीवन मंगलमय हो—यही प्रवासी जीवन का अंतिम उद्देश्य भी है, जो मानवता को एकसूत्र में बाँधने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

इसी क्रम में भारतीय प्रवास का ऐतिहासिक अध्ययन भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। औपनिवेशिक काल में भारतीयों का बड़े पैमाने पर प्रवासन एक संगठित और नियंत्रित प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। अंग्रेजों द्वारा कृषि और औद्योगिक श्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए भारतीयों को गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरीशस, फिजी, गुयाना, त्रिनिदाद और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में भेजा गया। यह प्रवास स्वैच्छिक नहीं था, बल्कि आर्थिक शोषण, सामाजिक असुरक्षा और औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न हुआ था। इन प्रवासियों ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन व्यतीत किया लंबे कार्य घंटे, न्यूनतम वेतन, सामाजिक अलगाव और सांस्कृतिक विस्थापन उनके जीवन की प्रमुख विशेषताएँ थीं। फिर भी, उन्होंने अपने धर्म, भाषा, रीति–रिवाज और त्योहारों को जीवित रखा। उदाहरण के लिए, मॉरीशस में आज भी होली और दिवाली का उत्सव उसी उत्साह से मनाया जाता है जैसे भारत में मनाया जाता है। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रवासी समुदाय अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कितनी गहराई से जुड़ा रहता है।

फिर स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय प्रवास का स्वरूप धीरे–धीरे बदलने लगा। अब प्रवास मुख्यतः शिक्षित और कुशल जनसंख्या के माध्यम से होने लगा, जिसे 'ब्रेन ड्रेन' के रूप में भी देखा गया। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और शिक्षाविद बेहतर अवसरों की तलाश में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की ओर आकर्षित हुए। इस प्रवास ने भारतीयों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। उदाहरण के रूप में, सिलिकॉन वैली में भारतीय आईटी पेशेवरों की महत्वपूर्ण उपस्थिति है, जिन्होंने वैश्विक तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रवासी जीवन में व्यक्ति को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भाषा की समस्या, सांस्कृतिक भिन्नता, सामाजिक अलगाव और नस्लीय भेदभाव जैसी समस्याएँ प्रवासियों के जीवन को जटिल बनाती हैं। कई बार उन्हें अपनी योग्यता के अनुरूप अवसर नहीं मिलते और उन्हें निम्न स्तर के कार्य भी करने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रवासी व्यक्तियों को अपने मूल देश और नए देश के बीच संतुलन बनाने में भी कठिनाई होती है। यह द्वंद्व विशेष रूप से दूसरी पीढ़ी के प्रवासियों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो अपने माता–पिता की सांस्कृतिक परंपराओं और स्थानीय समाज की आधुनिक जीवन शैली के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

यदि सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो प्रवासी जीवन अत्यंत समृद्ध और जटिल दोनों है। प्रवासी व्यक्ति एक प्रकार की 'द्विसांस्कृतिक पहचान' विकसित करता है, जिसमें वह अपनी मूल संस्कृति और नई संस्कृति दोनों को अपनाता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में बसे भारतीय परिवारों में बच्चे अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी जीवन शैली को अपनाते हुए भी भारतीय त्योहारों और परंपराओं से जुड़े रहते हैं। यह सांस्कृतिक समन्वय एक नई पहचान को जन्म देता है, जिसे 'हाइब्रिड कल्चर' कहा जाता है।

वस्तुतः वैश्वीकरण के युग में प्रवास की प्रकृति में व्यापक परिवर्तन आया है। सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और संचार के आधुनिक साधनों ने प्रवास को सरल और सुलभ बना दिया है। आज व्यक्ति अपने देश से हजारों किलोमीटर दूर रहते हुए भी अपने परिवार और संस्कृति से जुड़ा रह सकता है। सोशल मीडिया, वीडियो कॉल और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने इस दूरी को कम कर दिया है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक अर्थव्यवस्था में कुशल श्रम की मांग ने अंतरराष्ट्रीय प्रवास को बढ़ावा दिया है।

यदि प्रवासी भारतीयों के योगदान की बात की जाए तो यह केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वे अपने ज्ञान, अनुभव और कौशल के माध्यम से अपने मूल देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत को प्राप्त होने वाली विदेशी मुद्रा का एक बड़ा हिस्सा प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजा जाता है, जिसे 'रेमिटेंस' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, कई प्रवासी भारतीय भारत में निवेश करते हैं, जिससे रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, खाड़ी देशों में कार्यरत भारतीय श्रमिक भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सामाजिक दृष्टि से भी प्रवासी समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। भारतीय भोजन, योग, आयुर्वेद और बॉलीवुड जैसे सांस्कृतिक तत्वों ने वैश्विक स्तर पर भारतीय पहचान को मजबूत किया है। यह सांस्कृतिक प्रसार प्रवासी समुदायों के माध्यम से ही संभव हुआ है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रवासी जीवन एक चुनौतीपूर्ण अनुभव हो सकता है। घर से दूर रहने का अकेलापन, पहचान का संकट और सामाजिक अलगाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। कई प्रवासी व्यक्तियों को "होमसिकनेस' का अनुभव होता है, जिसमें वे अपने देश, परिवार और संस्कृति को याद करते हैं। इसके बावजूद, समय के साथ वे नए परिवेश में स्वयं को ढाल लेते हैं और एक नई पहचान का निर्माण करते हैं। इस प्रकार प्रवासी जीवन एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक सभी आयाम सम्मिलित होते हैं। यह व्यक्ति को नए अवसर प्रदान करता है, लेकिन साथ ही अनेक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। प्रवासी जीवन का यह द्वंद्व ही इसे एक जटिल और रोचक अध्ययन का विषय बनाता है।

निष्कर्ष

प्रवासी जीवन समकालीन विश्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसने न केवल व्यक्तियों के

जीवन को परिवर्तित किया है, बल्कि वैश्विक समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के स्वरूप को भी गहराई से प्रभावित किया है। यह स्पष्ट है कि प्रवास केवल भौगोलिक सीमाओं के पार जाने की घटना नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक मानवीय अनुभव है, जिसमें पहचान, संबंध, अवसर और संघर्ष सभी समाहित होते हैं। आधुनिक वैश्वीकरण के युग में प्रवास ने राष्ट्रों के बीच पारस्परिक निर्भरता को बढ़ाया है और विश्व को एक 'वैश्विक ग्राम' के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक दृष्टि से प्रवासी समुदायों ने अपने मूल और गंतव्य दोनों देशों के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि यह सामाजिक विकास और निवेश के नए अवसर भी प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, उच्च कुशल प्रवासियों ने विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया है। सांस्कृतिक दृष्टि से प्रवासी जीवन ने विविध संस्कृतियों के बीच संवाद, सह–अस्तित्व और समन्वय को प्रोत्साहित किया है। भारतीय डायस्पोरा ने विश्वभर में भारतीय संस्कृति, परंपराओं, भाषा, योग, आयुर्वेद और खान–पान को लोकप्रिय बनाया है, जिससे सांस्कृतिक वैश्वीकरण को नई दिशा मिली है। यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान न केवल विभिन्न समाजों को एक–दूसरे के निकट लाता है, बल्कि सहिष्णुता और बहुलता की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

हालांकि, प्रवासी जीवन चुनौतियों से रहित नहीं है। पहचान का संकट, सांस्कृतिक द्वंद्व, सामाजिक अलगाव और नस्लीय भेदभाव जैसी समस्याएँ आज भी अनेक प्रवासियों के जीवन का हिस्सा हैं। विशेष रूप से नई पीढ़ी के प्रवासियों के लिए अपनी जड़ों और नई संस्कृति के बीच संतुलन स्थापित करना एक जटिल प्रक्रिया बन जाता है। इसके बावजूद, प्रवासी समुदाय अपनी अनुकूलन क्षमता, संघर्षशीलता और रचनात्मकता के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना करते हुए एक नई बहुसांस्कृतिक पहचान का निर्माण करते हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रवासी जीवन आधुनिक युग की एक ऐसी सशक्त प्रक्रिया है, जो सीमाओं को लांघते हुए मानवता को जोड़ने का कार्य करती है। भारतीय डायस्पोरा इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने विश्व स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करते हुए आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है। भविष्य में भी प्रवास की यह प्रक्रिया वैश्विक विकास, सांस्कृतिक समन्वय और मानव एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हुसैन, माजिद. जनसंख्या भूगोल. नई दिल्ली: मैक्ग्रा हिल, 2010.
2. चांदना, आर.सी. जनसंख्या भूगोल. नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिकेशन, 2005.
3. चोपड़ा, पी.एन. भारत का आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: सुल्तान चंद, 2012.
4. सिंह, के. एन. प्रवासन अध्ययन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015.
5. शर्मा, आर.के. समाजशास्त्र के सिद्धांत. जयपुर: पंचशील, 2011.
6. गुप्ता, एस. भारतीय समाज. दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग, 2014.
7. वर्मा, एम. वैश्वीकरण और समाज. लखनऊ: हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2016.
8. तिवारी, पी. सांस्कृतिक अध्ययन. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013.
9. मिश्रा, आर. प्रवासी भारतीय. इलाहाबाद: लोकभारती, 2012.
10. यादव, एस. भारतीय डायस्पोरा. पटना: साहित्य भवन, 2017.
11. कुमार, वी. अंतरराष्ट्रीय प्रवासन. दिल्ली: अटलांटिक, 2018.
12. सिंह, आर. सामाजिक परिवर्तन. जयपुर: रावत, 2011.
13. गुप्ता, पी. अर्थशास्त्र के सिद्धांत. दिल्ली: सुल्तान चंद, 2010.
14. जोशी, एम. वैश्विक अर्थव्यवस्था. मुंबई: हिमालय, 2015.
15. शुक्ल, ए. समाज और संस्कृति. दिल्ली: प्रभात, 2013.
16. चौधरी, डी. भारतीय संस्कृति. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014.
17. पांडेय, एन. प्रवासन और विकास. दिल्ली: सेज, 2016.
18. त्रिपाठी, एस. भारतीय समाजशास्त्र. वाराणसी: भारती भवन, 2012.
19. श्रीवास्तव, ए. वैश्वीकरण अध्ययन. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड, 2017.
20. अग्रवाल, बी. मानव भूगोल. जयपुर: पंचशील, 2011.
21. सिंह, डी. आर्थिक विकास. दिल्ली: मैकमिलन, 2014.
22. मिश्रा, वी. सांस्कृतिक परिवर्तन. इलाहाबाद: लोकभारती, 2013.
23. यादव, आर. समाज और आधुनिकता. पटना: ज्ञानदीप, 2015.
24. शर्मा, एस. अंतरराष्ट्रीय संबंध. दिल्ली: राजकमल, 2016.
25. वर्मा, आर. मानव विकास. लखनऊ: हिंदी अकादमी, 2012.
26. गुप्ता, के. सामाजिक संरचना. दिल्ली: सुल्तान चंद, 2011.
27. पांडेय, एस. विकास अध्ययन. दिल्ली: सेज, 2018.
28. त्रिपाठी, आर. वैश्विक समाज. वाराणसी: भारती भवन, 2014.
29. श्रीवास्तव, पी. संस्कृति और पहचान. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड, 2015.
30. अग्रवाल, आर. सामाजिक सिद्धांत. जयपुर: रावत, 2013.
31. सिंह, एस. प्रवासी अनुभव. दिल्ली: प्रभात, 2017.
32. मिश्रा, डी. आर्थिक नीतियाँ. इलाहाबाद: लोकभारती, 2016.
33. यादव, के. आधुनिक समाज. पटना: साहित्य भवन, 2018.
34. शर्मा, डी. समाजशास्त्र परिचय. दिल्ली: मैकमिलन, 2012.
35. वर्मा, एस. वैश्विक अध्ययन. लखनऊः हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2019.
36. महोपनिषद. अध्याय 6, श्लोक 71 .
37. व्यास. भगवद्गीता. अध्याय 4, श्लोक 38.
38. व्यास. भगवद्गीता. अध्याय 6, श्लोक 5.
39. यजुर्वेद. शान्ति मंत्र.